समुद्रतट के ग्रामीण समुदाय का पर्यावरण और मौसमी स्थानांतर

डॉ. निलेश बी. सेता
आसिस्टन्ट प्रोफेसर, श्रीमती वी. पी. कापड़िया महिला आर्ट्स कॉलेज, भावनगर, गुजरात

सार संक्षेप

प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति गाँव एवं कृषि की संस्कृति रही है इतना ही नहीं भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्यतः आधार भी कृषि रहा है । २०११ की जनगणना के आधार भारत के ६९% लोग गांव मे रह रहे है । देश के सकल घरेलू उत्पादन मे १९५० तक इस क्षेत्र का योगदान ५०% अधिक था वह २०२१-२२ में तकरीबन १६.३% तक रह गया । जबकि रोजगार के क्षेत्र मे १९५० में ७०% से अधिक हिस्सा था जो २०१० के दशक में ५२% और २०२१-२२ में ४३% हुवा यानि की देश के सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का हिस्सा जितना तेजी से कम हुवा उतना रोजगार के क्षेत्रमे देखने को नहीं मिल रहा। भारतीय कृषि पर पर्यावरण का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है । हालाकी मनुष्य और पर्यावरण के बिच का संबंध मानवजीवन के प्रारंभ से ही देखा जाता है। डार्विनने भी अपने ऊतक्रांति के सिद्धांत में मनुष्य की उत्पति, प्रकृति के तत्वों से हुआ है हालाकी समकालीन समय मै मनुष्य द्वारा प्रकृति पर हावी होने की सनक बढ़ गई है जिस वजह से कई समस्याऔ ने जन्म लिया और उसका शिकार स्वयं मनुष्य भी हो रहा है । भारत में गुजरात राज्य को १६०० की. मी. से अधिक लंबा समुद्रतट है । गुजरात के कई गांव समुद्रतट पर स्थित है जहा समुद्र के जल का प्रभाव मानवीय जीवन में देखा जा सकता है । इस बात को ध्यान में रखते हुई प्रस्तुत अध्ययन भावनगर जिले के तळाजा तहेसिल के समुद्रतट पर आए गाँवों मे से मौसमी प्रवासन की बढ़ती समस्या के बारे में किया गया है । इस क्षेत्र में बढ़ते प्रवासन की मूल वजह यह है की मिट्टी मे बढ़ती लवणता या बढ़ता नमक है। समुद्रतट के ग्रामीण क्षेत्र में भूगर्भ जल के अत्याधिक दोहन से मीठे पानी का स्तर समुद्र तल से नीचे गिर गया है । जिससे समुद्र का लवणता युक्त जल जमीन में आने लगा है, जिस कारण समुद्रतट की मिट्टी में लवणता बढ़ गई है जिसका प्रभाव यहा की कृषि पर देखा जा सकता है। जैसे जैसे कृषि उत्पादकता में गिरावट आती है, कृषि आधारित व्यवसायों और कृषि श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर भी कम होते जा रहे है । इस वजह से लोगों को रोजगार के लिए मौसमी तौर पर गुजरात के अन्य क्षेत्र में स्थानांतर करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। लोगों द्वारा होने वाले प्रवासन के सामान्यतः तीन प्रभाव देखने को मिलते है १) लोग जिस क्षेत्र में जाते है वहा पर होने वाला प्रभाव। २) उस क्षेत्र पर होने वाला पभाव से लोग स्थानांतर करते है और ३) स्थानांतर करने वाली जनसंख्या पर होने वाले प्रभाव। इस अध्ययन मे तीसरे प्रकार के प्रभाव यानि की जो लोग स्थानांतर करते है उनकी सामाजिक संरचना, अर्थव्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था किस तरह प्रभावित हो रही है, लोग जहा पर प्रवासन कर के जाते है वह मालिक के साथ उनके संबंध, कार्य स्थल पर महिला की स्थिति आदि प्रभावों की जाँच की गई है, साथ ही इस समस्या को कैसे हल कर सकते है – उस दिशा मे भी जाँचने का प्रयास किया गया है ।

कीवर्ड : ग्रामीण समुदाय, मौसमी स्थानांतर, पर्यावरण, समुद्रतट

*Corresponding Author Email: nilseta07@gmail.com
Published: 22 August 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i8.45887
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

परिचय :-

मानव और पर्यावरण के बीच का संबंध मानव समाज की शरुआत से ही देखा जाता है। मानव संस्कृति के विकास में प्राकृतिक तत्त्वों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। डार्विन ने भी अपने विकासवाद के सिद्धांत में मानव की उत्पत्ति प्राकृतिक तत्त्वों से हुई होने का जिक्र किया है। प्राकृतिक तत्वों के उपयोग से प्रत्येक जीव अपना अस्तित्व बनाए रखता है। प्राकृतिक तत्त्वों के अधिक से अधिक उपयोग से मनुष्य ने अपनी सुरक्षा, सुख-भोग, भौतिक सुविधाओं और संस्कारों में वृद्धि की है। फिर भी, हमारी प्राचीन संस्कृति में मनुष्य और प्रकृति के बीच तादात्म्य था, लेकिन वर्तमान समय में मनुष्य को प्रकृति पर अधिकार जमाने की लालसा लगी जिसके कारण कई समस्याओं ने जन्म लिया जिसका शिकार स्वयं मनुष्य ही बन रहा है।

प्राचीन समय से ही भारतीय संस्कृति गाँव और कृषि आधारित रही है, इतना ही नहीं भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार भी कृषि रहा है। २०११की जनगणना के अनुसार भारत के ६९% लोग गाँव में बसते थे। देश के सकल घरेलू उत्पादन में १९५० तक कृषि क्षेत्र का योगदान ५०% से अधिक था जो २०२१-२२ में तकरीबन १६.३% तक सीमित हो गया। जबकि रोजगार के क्षेत्र में १९५० में ७०% से अधिक भागीदारी थी जो २०१०के दशक में ५२% और २०२१-२२ में ४३% हो गई, अर्थात देश के सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का हिस्सा जितनी तेजी से घटा उतना ही घटावा रोजगार के क्षेत्र में नहीं देखा गया। तटवर्ती ग्रामीण समुदाय में बदलते पर्यावरण के कारण आजीविका के अवसर में कमी आई जिसके कारण कई समस्याओं का जन्म हुआ जिनमें से एक प्रमुख समस्या है तटवर्ती क्षेत्र में आए गाँवों से लोगों द्वारा किया जाने वाला मौसमी स्थानांतर।

लोगों द्वारा किया जाने वाला स्थानांतर की सामान्यतः तीन असर देखी जाती हैं जिनमें १) लोग जिस क्षेत्र में जाते हैं वहाँ होने वाला प्रभाव २) जहाँ से लोग स्थानांतर करते हैं उस क्षेत्र पर होने वाला प्रभाव और 3) स्थानांतर करने वाली जनसंख्या पर होने वाला प्रभाव । प्रस्तुत अध्ययन में तीसरे प्रकार का प्रभाव अर्थात जो लोग स्थानांतर करते हैं उनकी सामाजिक संरचना, अर्थव्यवस्था, शैक्षणिक व्यवस्था पर क्या प्रभाव होता है एवं तटवर्ती ग्रामीण समुदाय में देखी जाने वाली मौसमी स्थानांतर की समस्या का कैसे हल किया जा सकता है उस दिशा में समाधान खोजने का प्रयास किया गया है।

भारत मे प्रवासन :

२०११ की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, भारत मे 45.5 मिलियन लोगों ने प्रवासन किया था, जिसमें से ५३.८% स्थानांतर ग्रामीण क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ था। रिपोर्ट से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष रोजगार की तलाश में स्थानांतर करते हैं जबकि महिलाएं विवाह के कारण स्थानांतर करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतर करने वाले लोगों में निरक्षरता का उच्च स्तर पाया जाता है। इसका कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों में निरक्षरता की वजह से विशेष दक्षता का अभाव होता है। इसलिए वे शहरों में जाकर काम करने में असमर्थ होते हैं। जबकि ग्रामीण समुदाय में मुख्य रूप से कृषि व्यवसाय होता है जिसमें अकुशल श्रमिकों को भी काम मिल जाता है।

शोध की पृष्ठभूमिः

भारत ७५१७ किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा वाला देश है। भारत के 9 राज्य और 4 केंद्र शासित प्रदेश समुद्री तटरेखा वाले हैं। जिनमें गुजरात भी १६०० किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा वाला राज्य है। गुजरात के कई गाँव समुद्र तट पर स्थित हैं। जहा समुद्री जल का प्रभाव मानवीय जीवन पर देखा जा सकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, इस अध्ययन में भावनगर जिले के तळाजा तहसील के समुद्र तटीय ग्रामीण समुदाय में बढ़ते मौसमी स्थानांतर की समस्या के संदर्भ में किया गया है। इस क्षेत्र में बढ़ते स्थानांतर का प्रमुख कारण यहां की भूमि में बढ़ता

लवणता है। समुद्र तटीय ग्रामीण क्षेत्र में भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण मीठे पानी का स्तर समुद्र के जल स्तर से नीचे चला गया है। जिससे समुद्री जल भूमि में आने लगा है। जिसके कारण समुद्र तटीय भूमि में लवणता का स्तर बढ़ने लगा है। जिसका प्रभाव यहां की कृषि पर देखा जा सकता है। एक दौर में यहा पर दालों का व्यापक उत्पादन होता था इसलिए इस प्रदेश को गुजराती में 'कंथाळ' के रूप में जाना जाता था, लेकिन आज यहां नाम मात्र का भी उत्पादन नहीं होता है। जैसे-जैसे कृषि उत्पादन में कमी होती जा रही है वैसे-वैसे कृषि आधारित व्यवसायों और श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसरों में कमी होती जा रही है। जिस वजह से लोगों को रोजगार के लिए गुजरात के अन्य क्षेत्रों में मौसमी स्थानांतर करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

शोध परियोजना :

व्यक्ति या समूह के निवास स्थान में होने वाले बदलाव को स्थानांतरण या प्रवासन कहते हैं। अधिक स्पष्ट रूप से कहे तो लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन या प्रवासन को स्थानांतरण कहा जा सकता है। हालांकि, यहा एक बात याद रखनी है कि गांव के लोग रोजगार के लिए सुबह शहर जाते हैं और शाम को गांव लौट आते हैं, इसे स्थानांतरण नहीं कहा जा सकता। जब लोग अपने निवास स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर स्थायी रूप से रहने के लिए जाते हैं, तभी इसे स्थानांतरण कहा जाता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, नीचे दी गई शोध परियोजना तैयार की गई है।

शोध का उद्देश्य:

वर्तमान अध्ययन निम्नलिखित कुछ शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है:

१) तटीय ग्रामीण समुदाय से मौसमी स्थानांतरण करने वाले लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आकलन करना।

२) तटीय ग्रामीण क्षेत्र से मौसमी स्थानांतरण करने वाले परिवारों के बच्चों की शिक्षा पर हो रहे प्रभावों का अध्ययन करना।

३) स्थानांतरण के स्थान पर मजदूर-मालिक संबंधों और काम की स्थिति का अध्ययन करना।

४) स्थानांतरण के स्थान पर महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र :

गुजरात राज्य में स्थित भावनगर जिला एक विस्तृत तटीय क्षेत्र समाहित करता है। भावनगर जिले के १० तहसील में से ४ तहसील भावनगर, घोघा, तळाजा और महुवा समुद्र तट वाले हैं। इस अध्ययन में तळाजा तहसील के समुद्र तट पर स्थित गाँवों में से मेथला, गढुला, आंबला, खंडेरा और रेलिया को ध्यान में रखा गया है। अध्ययन में समुद्र तटीय गाँव की पहचान के लिए समुद्र तट से 5 किलोमीटर की सीमा मे आने वाले गाँव को समुद्र तटीय गाँव के रूप में पहचाना गया है।

नमूना चयन :

इस अध्ययन में उन परिवारों के बारे में जानकारी जुटाई है जो मौसमी स्थानांतरण करके एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं। मौसमी स्थानांतरण करने वाले परिवारों के बारे में स्पष्ट और सटीक जानकारी के अभाव में 'स्नोबॉल बिन-यादृच्छिक' नमूना युक्ति का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रत्येक गांव से २० उत्तरदाताओं को चुनकर कुल १०० उत्तरदाताओं से तथ्य एकत्र किया गया है।

तथ्य संग्रहण की तकनीक :

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के अंतर्गत समुद्रतट के वातावरण का कृषि उत्पादकता पर प्रभावों का आकलन करने के लिए निरीक्षण और साक्षात्कार तकनीक का प्रयोग किया गया है। जबकि स्थानांतरित परिवारों से जानकारी एकत्र करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

सूचना का विश्लेषण :

वर्तमान अध्ययन के अंतर्गत तळाजा तहसील में समुद्र तट पर स्थित गाँवों में से ५ गाँवों को चुना गया है। इन ५ गाँवों के १०० उत्तरदाताओं से जानकारी एकत्र की गई है जिसका विश्लेषण निम्नलिखित है।

प्रवासन के सामाजिक प्रभाव:

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचना से पता चलता है कि इस क्षेत्र में होने वाले मौसमी स्थानांतरण का समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों एवं सामाजिक संबंधों पर व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। शोध क्षेत्र से लोग मौसमी स्थानांतर करते हैं जिस वजह उन्हें साल का कुछ समय अपने घर से दूर रहना पड़ता है और कई बार रहने की स्थिति भी असुरक्षित होती है। इस क्षेत्र में बेटी देना कम पसंद किया जाता है, जिसके कारण लड़कों के लिए उचित जीवनसाथी चुनना मुश्किल हो जाता है। विभिन्न सामाजिक अवसरों के उत्सव में भी बदलाव आया है। पहले यहां ज्यादातर विवाह महा मास में होते थे, लेकिन अब इस समय के दौरान लोग रोजगार के लिए बाहर गए होते हैं, इसलिए विवाह वैशाख मास में किए जाते हैं। रोजगार के समय यदि गाँव या रिश्तेदारों में मृत्यु, विवाह या और कोई अवसर हो तो दल के एक-दो सदस्य ही इस अवसर में भाग लेता है जबकि दल के अन्य सदस्य रोजगार के स्थान पर ही रहते हैं। जब घर से कमाने वाले लोग रोजगार के लिए स्थानांतरित होते हैं तो घर की देखभाल के लिए बुजुर्गों को घर पर रहना पड़ता है। इस प्रकार बुढ़ापे में भी उन्हें अपने बच्चों से दूर एकाँकी जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

प्रवासन के आर्थिक प्रभाव:

अध्ययन के तहत अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि मौसमी स्थानांतर करने से उनकी आय में वृद्धि हुई है। फिर भी, वे जिस क्षेत्र में रोजगार के लिए जाते हैं उससे संतुष्ट नहीं हैं क्योंकि उन्हें वहां अपनी मातृभूमि और परिवार से दूर खेत में झोपड़ी बनाकर एकांत में निवास करना पड़ता है।

अध्ययन के तहत उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि प्रवासन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि स्थानांतर के नए स्थल पर कार्य का प्रबंध इस तरह किया जाता है कि लोगों को शायद ही कभी काम के बिना बैठना पड़े। यहां निरंतर काम मिलता रहता है इस कारण उनकी आय में वृद्धि होती है। स्थानांतर करने वाले लोग मुख्यतः कपास चुनने के लिए जाते हैं, इस काम में छोटे-बड़े सब को शामिल किया जा सकता है। साथ ही, कपास चुनने का काम मणवड़ी में तय किया जाता है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को उसके काम के अनुपात में वेतन मिलता है, वही किसान द्वारा पैसों का भुगतान भी समय पर किया जाता है और आवश्यकता हो तो मालिक द्वारा निकासी भी प्रदान की जाती है। अधिकांश उत्तरदाता स्थानांतर के स्थल से हुई आय का उपयोग ऋण की भरपाई करने और सामाजिक अवसरों को पूरा करने के लिए करते हैं।

प्रवासी श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव :

चीन की एक प्रसिद्ध कहावत है कि, "यदि तुम एक साल के लिय योजना बना रहे हो तो अनाज बोओ, यदि तुम दस साल के लिय योजना बना रहे हो तो वृक्ष लगाओ और यदि तुम सौ साल के लिय योजना बना रहे हो तो लोगों

को शिक्षा दो।" इस बात को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रवासन का शिक्षा व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है।

जब परिवार एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतर करते हैं तो अपने मूल स्थान पर बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता है। इसलिए वे अपने बच्चों को साथ ले जाते हैं। इस स्थिति में बच्चा अपने मूल विद्यालय से ४ से ६ माह के लिए दूर रहता है, जिससे उसकी शिक्षा प्रभावित होती है। हालाँकि सरकार ने इस बात पर ध्यान दिया है और ऐसे बच्चों के लिए जहां वे स्थानांतर करके जाते हैं वहां शिक्षा की व्यवस्था की है। इसके अंतर्गत ऐसे रोजगार के लिए स्थानांतर करने वाले माता-पिता जो अपने बच्चों को साथ ले जाने के लिए मजबूर होते हैं, स्थानीय स्कूल द्वारा बच्चे को एक प्रवेश पत्र दिया जाता है, जिसे स्थानांतर के स्थान के नजदीक स्थित विद्यालय में जमा करवाकर बच्चा वहां शिक्षा प्राप्त कर सकता है। लेकिन बच्चों खेतों में विशेष रूप से कपास चुनने का कार्य अच्छी तरह से कर सकते है, इसलिए बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय खेत में काम करने के लिए ले जाया जाता है।

इस अध्ययन से पता चलता है कि कार्यस्थल पर बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय है। अध्ययन के अंतर्गत १०० उत्तरदाताओं में से ८८ घरों में बालिका थी, जिनमें से ६७ घरों में बालिका शिक्षा के लिए विद्यालय नहीं जाती थी। इसके कारणों की जांच करने पर पता चला कि स्थानांतर के स्थान पर माता-पिता दोनों खेत में काम करने जाते हैं, ऐसे में घर का काम करने और छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने की जिम्मेदारी बालिका पर होती है, साथ ही उसे खेत में काम करने के लिए भी ले जाया जाता है। इस स्थिति में बालिका शिक्षा से वंचित रह जाती है।

प्रवासी महिलाओं की स्थिति और चुनौतियाँ :

परंपरागत भारतीय व्यवस्था मै महिलाएं घरेलू कार्यों से जुड़ी रहती है जिसमें बच्चों की देखभाल, घर की सफाई, खाना बनाना, बुजुर्गों की सेवा करना आदि कार्य महिलाओं के हिस्से में होते हैं। यह कार्य गैर-आर्थिक है, अर्थात इसके बदले में धनराशि प्राप्त नहीं होती है। लेकिन जो महिलाएं मौसमी स्थानांतर करती हैं, उन्हें स्थानांतर के स्थान पर न केवल गैर-उत्पादक कार्य करने होते हैं, बल्कि खेतों में काम करने के लिए भी जाना पड़ता है, अर्थात उत्पादक कार्य में भी जुड़ना पड़ता है। अध्ययन के अंतर्गत उत्तरदाताओं के अनुसार, प्रवासन के स्थान पर महिलाएं सुबह ४ से ५ बजे के बीच उठती हैं। सूर्योदय होने तक घर का सारा काम निपटा के पुरुषों के साथ खेत में काम करने जाती हैं और शाम को घर आकर फिर से घरेलू कार्य करती हैं, यह उनकी नियमित दिनचर्या बन जाती है। इस तरह, स्थानांतर के स्थान पर महिलाओं को गृहकार्य की जिम्मेदारी और खेत में उत्पादन गतिविधि, दोनों भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं।

स्थानांतर करने वाले लोग स्थानांतर के स्थान पर झोपड़ियां बनाकर रहते हैं, इसलिए यहां बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है, खासकर शौचालय और स्नानागार के अभाव में कई बार महिलाओं को सामाजिक खतरे का सामना भी करना पड़ता है। सुबह-सुबह अंधेरे में खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है, जिससे कई बार कुत्ते या अन्य जानवरों द्वारा हमला किया जाता है, कभी-कभी लोगों द्वारा छेड़छाड़ भी की जाती है।

मजदूर-मालिक संबंध और कार्य स्थिति

जिस स्थान पर व्यक्ति स्थानांतर करके जाते है वहां जीवन की आवश्यक वस्तुएं ही साथ ले जाई जाती हैं। ऐसी स्थिति में किसान द्वारा कोई विशेष सुविधाएं दिए जाने की बात बहुत कम देखने को मिलती है। इस प्रकार, स्थानांतर करके जाने वाले लोग स्थानांतर के स्थान पर बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जीवनयापन करते हैं। किसान द्वारा अपने खेत में रहने के लिए झोपड़ी की व्यवस्था कराई जाती है, तो कभी-कभी बिजली या अनाज जैसी प्राथमिक

सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इससे अधिक भौतिक साधन मजदूर के रूप में गए व्यक्ति को प्राप्त नहीं होते हैं।

हालांकि यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि अध्ययन के अंतर्गत गाँव से लोग जिस क्षेत्र में स्थानांतर करके जाते हैं वहां किसानों द्वारा स्थानीय क्षेत्र की तुलना में अधिक आत्मीयता पूर्ण व्यवहार किया जाता है। इतना ही नहीं, जब मजदूर पर कोई कठिनाई आती है जैसे कि तबीयत खराब हो जाना, सामाजिक प्रसंगों में अधिक खर्च करना पड़े तो किसान उन्हें आर्थिक रूप से मदद करते हैं। साथ ही मजदूर के पारिवारिक प्रसंगों में उनके घर भी आते हैं। स्थानांतर के स्थान पर मजदूर-मालिक के बीच झगड़े या संघर्ष भी बहुत कम देखने को मिलता है।

इस प्रकार, उपरोक्त बातों से पता चलता है कि रोजगार के अभाव में अध्ययन के अंतर्गत गांवों से लोगों को मौसमी स्थानांतर करते है। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। लेकिन दूसरी ओर सामाजिक संबंध, शिक्षा व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव भी होता है। स्थानांतर के स्थान पर महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। स्थानांतर के कारण उत्पन्न हुए नए प्रश्नों का समाधान लाना जरूरी है जिसके लिए नीचे दिए गए कुछ सुझाव उपयोगी हो सकते हैं।

प्रस्तुत समस्या के समाधान के लिए मार्गदर्शक सुझाव:

- समुद्रतट के गाँवों की ज्यादातर जमीन लवणता के कारण बंजर हो गई है, जिसमें बाजरा और ज्वार के अलावा कोई अन्य फसल नहीं ली जा सकती। इसलिए ऐसी जमीन को उपजाऊ बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। पड़ी हुई जमीन में बबूल के पेड़ लगाने से लवणता की मात्रा कम की जा सकती है।
- समुद्रतट के क्षेत्रों में भूजल का स्तर नीचे जाने के कारण समुद्र का पानी जमीन में घुस आया है, इसलिए ऐसे क्षेत्रों में बांध बनाकर वर्षा के पानी को जमीन में उतरने के प्रयासों की अनिवार्यता है।
- अध्ययन क्षेत्र में पर्यावरणीय परिस्थिति का सीधा प्रभाव रोजगार पर हो रहा है, इसलिए इस क्षेत्र में घरेलू उद्योग और लघु उद्योग स्थापित करने के प्रयास किए जाने चाहिए।
- अध्ययन क्षेत्र के समुद्र तट पर पर्यटन स्थल के रूप में विकास की व्यापक संभावनाएं हैं इसलिए यदि इस क्षेत्र में पर्यटन का विकास हो तो स्थानीय लोगों को पर्याप्त मात्रा में रोजगार मिलेगा।
- मौसमी स्थानांतर करने वाले परिवारों में सबसे बड़ी समस्या शिक्षा की है। स्थानांतर की वजह बच्चों की शिक्षा बर्बाद होती है। इसलिए मौसमी स्थानांतर करने वाले परिवारों का सर्वेक्षण करके ऐसे बच्चों के लिए आवासीय स्कूल शुरू किए जाने चाहिए।

समापन:

उपरोक्त चर्चा से यह कहा जा सकता है कि स्थानांतर केवल एक जनसांख्यिकीय समस्या नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। स्थानांतर करने वाले व्यक्ति को अपने वतन और परिवार से दूर रहना पड़ता है जिसके कारण उसके सामाजिक संबंधों की व्यवस्था में परिवर्तन आता है। स्थानांतर के स्थान पर व्यक्ति को प्राथमिक सुविधाओं के अभाव में और एकांकी जीवन व्यतीत करना पड़ता है। स्थानांतर का बच्चों की शिक्षा पर गंभीर प्रभाव होता है तो महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। स्थानांतर करने से जो आय होती है उसका उपयोग वतन में आकर करना पड़ता है, क्योंकि यहां उन्हें रोजगार मिलने की संभावना बहुत कम होती है। समुद्र तटीय क्षेत्र में आने वाले ग्रामीण समुदाय के रोजगार के प्रश्नों का समाधान जल्दी से लाना अति आवश्यक है अन्यथा समाज में इसके गंभीर परिणाम आने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

संदर्भ सूची

1. व्यास हरिचन्द, *पर्यावरण कल, आज और कल*, श्याम पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली.
2. गुणवंत एम. ओज़ा, वस्ती एवं पर्यावरण(गुजराती), युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद गुजरात
3. निलेश दीक्षित, मानव भूगोल(गुजराती), युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद गुजरात
4. महेंद्र नायक, गुजरात का पर्यावरण(गुजराती), गुजरात कंजर्वेशन सोसायटी, बरोड़ा, गुजरात
5. https://www.census2011.co.in/data/village/516658-ambla-gujarat.html
6. https://iasp.ac.in/uploads/journal/10.%20Migration%20in%20India%20trends%20and%20characteristics-1669206793.pdf
7. https://www.india.gov.in/data-migration-2011-census-india